संपादक का नोट

मैं आप सभी को मेरे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के बहुमूल्य नाम में अभिवादन देती हूं।

मेरा विश्वास है कि आप सभी का यीशु में महान विश्वास है। यदि आप यीशु पर विश्वास करते हैं तो आपको एक विश्वासी कहा जाता है, अगर आप यीशु में विश्वास नहीं करते हैं तो आपको एक अविश्वासी कहा जाता है। यदि आप यीशु पर विश्वास नहीं करते हैं, तो बाइबल आपको कम विश्वास वाले लोग कहता है। अपने रोजाना प्रार्थना में, यीशु पर अपना विश्वास कबूल करें; उससे पूछो कि आप उस पर अपना विश्वास बढ़ा सकें, और अगर आप पूछते रहें, तो पवित्र आत्मा आपको विश्वास का फल देगा। यूहन्ना 7 : 38 ''जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी।''

विश्वास के बिना उसे खुश करना असंभव है, क्योंकि जो परमेश्वर के पास आता है उसे विश्वास करना चाहिए कि वह है, और वह उन लोगों का एक पुरस्कारकर्ता है जो ईमानदारी से उसकी खोज करते हैं।

पुराने करार में विश्वासियों के विश्वास के बारे में लिखा गया है। पहला पवित्र व्यक्ति, हाबिल, यहोवा के दिल में से एक था, वह प्रभु को देने का भेंट जानता था क्योंकि वह मानता था कि यीशु भेड़ की तरह दुनिया के पापों को दूर करने के लिए आया था। उसने अपने झुंड के पहिलौठे (उसकी सबसे अच्छी भेड़) को प्रभु के लिए एक भेंट के रूप में प्रस्तुत किया, जो अतः हमें अपना एकमात्र पुत्र (यीशु) हमें दे दिया।

हनोक ने अपने जीवन में प्रभु के साथ एक मित्र के रूप में चले, और प्रभु ने उसे ले लिया। प्रभु के साथ अपने निकटता के कारण, हनोक प्रभु के दूसरे बार आने की भविष्यवाणी करने में सक्षम था, इस प्रकार सभी विश्वासियों के लिए गवाही बन गया।

विश्वासी का जीवन आसान नहीं है क्योंकि इसमें उतार चढ़ाव, पत्थर और कांटे, दर्द और दुख हो सकता है; फिर भी इब्राहीम प्रभु के साथ चला, उसे पकड़कर, क्योंकि जिसके कारण उसे विश्वास का पिता कहा जाता है।

हे मेरे प्यारों, यीशु पर विश्वास करो और उसके साथ एक रहो। प्रचार करें कि आप उनको जानते हैं जिस पर आपने विश्वास किया है, और आपको यह समझाया गया है कि वह उस दिन तक आपके लिए जो प्रतिज्ञा आपने बनाए हैं, उसे बनाए रखने में सक्षम है।

सुलैमान ने अपने जीवन को विश्वास के साथ शुरू किया और उसने शानदार मंदिर बनाया। दुर्भाग्य से वह अंत तक अपना विश्वास नहीं रख सका।

मेरे प्रियजनों, अगर आपके जीवन में विश्वास की नदी बहती है तो आपकी जिन्दगी यशस्वी होगी।

जब भविष्यद्वक्ता बलाम ने गैर–यहूदी व्यक्तियों को एक बड़ी ऊंचाई से इजराइल के तंबू को दिखाया था, तो उन्होंने कहा गिनती 24 : 6 ''वे तो नालों वा घाटियों की नाईं, और नदी के तट की वाटिकाओं के समान ऐसे फैले हुए हैं, जैसे कि यहोवा के लगाए हुए अगर के वृक्ष, और जल के निकट के देवदारू।'' वे कितने फल दे सकते थे, बलामा समझ सकता था

पवित्र आत्मा का एक प्रतीक है जीवन की नदी। जीवन की नदी आपको यीशु की तरह बनाने के लिए समुद्र की तरह फैल रही है। उनकी इच्छा है कि आपको एक फलदायी जीवन दे।

एक उपयोगी जीवन क्या है?

1) हमारा प्रभु पवित्र है और आप को भी अपने सभी व्यवहार में पवित्र होना चाहिए।

2) जैसा कि वह पवित्र है हमें भी पवित्र होना चाहिए।

3) जैसा कि वह हमें प्यार करता है हमें भी एक दूसरे से प्यार करना चाहिए।

4) जैसा कि उसने हमें माफ किया इसलिए हमें एक–दूसरे को क्षमा करना चाहिए।

5) जब यीशु इस दुनिया का नहीं था, तो हमें भी इस दुनिया का नहीं होना चाहिए।

6) जैसे कि वह सिद्ध है, हमें भी सिद्ध होना चाहिए।

जीवन की नदी दो उपहारों के साथ आती है,

1) पहला उपहार प्रभु के सिंहासन से बहती है। प्रकाशितवाक्य 22 : 1 ''फिर उस ने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की एक नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकल कर उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती थी।''

2) दूसरा उपहार, जीवन की नदी, विश्वासी के दिल से बहेगी। यूहन्ना 7 : 37,38 ''37 फिर पर्व के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, यदि

कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पीए। 38 जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी।''

जो नदी फैल रही है वह एक जगह पर नहीं खड़ी होगी। प्रेरितों के काम 1 : 8 ''परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।''

देखें कि जीवन की नदी कहाँ बह रही है। प्रियजनों, प्रभु आप को अभिषेक करने जा रहे हैं और आपका जीवन, जीवन की नदी की तरह बदल जाएगा।

हमारा प्रभु, आपको ऐसा बनाएगा जैसे भजन संहिता 113 : 8 ''कि उसको प्रधानों के संग, अर्थात अपनी प्रजा के प्रधानों के संग बैठाए।''

निश्चित रूप से प्रभु आपको एक उपयोगी जीवित नदी बना देगा। यशायाह 35 : 1–3 ''1 जंगल और निर्जल देश प्रफुल्लित होंगे, मरूभूमि मगन हो कर केसर की नाईं फूलेगी; 2 वह अत्यन्त प्रफुल्लित होगी और आनन्द के साथ जयजयकार करेगी। उसकी शोभा लबानोन की सी होगी और वह कर्मेल और शारोन के तुल्य तेजोमय हो जाएगी। वे यहोवा की शोभा और हमारे परमेश्वर का तेज देखेंगे। 3 ढीले हाथों को दृढ़ करो और थरथराते हुए घुटनों को स्थिर करो।''

प्रभु आपको आशीषित करे ताकि दूसरों को आशीर्वाद मिले!

प्रभु की सेवा में आपकी,

पास्टर सरोजा म.

धन्य हैं, जो यहोवा का भय मानते हैं।

मरकुस 7 : 26 ''यह यूनानी और सूरूफिनीकी जाति की थी; और उस ने उस से बिनती की, कि मेरी बेटी में से दुष्टात्मा निकाल दे।'' सिरोफीनिशियन गलील के अतिरिक्त एक देश है। यीशु मसीह ने गलील में कई चमत्कार किए। इस यूनानी स्त्री ने यीशु मसीह के बारे में बहुत कुछ सुना था और उन्होंने जो चमत्कार किए थे। इसलिए, उसने प्रभु पर विश्वास किया और उनके चमत्कार पर इस प्रकार उसकी बेटी को उपचार के लिए ले आई। यहाँ हम देखते हैं कि यह यूनानी महिला यीशु के पैरों पर गिरती है और उसकी बेटी को दुष्ट बंधुओं से बचाने की मांग करती है। बाइबिल में, यह यूनानी महिला का नाम दर्ज नहीं किया गया है, वह बाईबल में अनजान लोगों में से है। लेकिन, क्योंकि यीशु मसीह में उसके भरोसे और विश्वास के कारण, उसकी एकमात्र इच्छा थी कि उसकी बेटी को शत्रु के बंधन से मुक्ति मिलनी चाहिए। आज भी, इस दुनिया में कई लोग हैं, जो मुक्ति के लिए प्रार्थनाएं चाहते हैं, समृद्धि की प्रार्थना करते हैं, वे कलीसिया नहीं चाहते हैं, वे अच्छे विश्वासी नहीं बनना चाहते हैं। वे अपने दिल में, उनकी एकमात्र इच्छा है कि समस्याओं से आत्मसम्मान और उद्धार प्राप्त करे। दुनिया में, लोग सुनते हैं कि 'हालेलुयाह समूह' हैं जो इस दुनिया में काम कर रहे हैं ताकि लोगों को छुटकारा दे सकें और ठीक कर सकें। उदाहरण के लिए, गुजरात में, एक महिला थी जिसको लकवा मारा था और बिस्तर पर पड़ी थी। जब उसने हमसे मुलाकात की, उसने कहा कि उनके गांव के लोग ने उसे बताया था कि ''केवल 'हालेलुयाह समूह' मुझे ठीक कर सकता है''। इसी तरह इस यूनानी स्त्री ने यह भी सुना है कि यीशु मसीह आरोग्यसाधक और वह टूटे हुए दिल को चंगा करनेवाला और बंधकों को मुक्त करनेवाला परमेश्वर है। उन्होंने लंगड़े को फिर से चलाया और अंधों को नजर दी। यह खबर देश में जंगली आग की तरह फैल गई। इस प्रकार, पड़ोसी देश से यूनानी महिला, यीशु से मिलने आई और उत्सुक थी कि उसकी बेटी को ठीक किया जाए और शत्रु से मुक्ति मिले। आज भी, इस प्रकार के लोग मौजूद हैं, वे केवल अपने शारीरिक उपचार चाहते हैं।

हमारा जीवन ऐसा नहीं होना चाहिए, हम केवल हमारी शारीरिक उपचार चाहते हैं। बल्कि, हमें यह चाहिए कि हम आन्तरक के लिए धर्मी रहे और हमारी प्रार्थनाओं को प्रभु सुने, हम चाहते हैं कि प्रभु परमेश्वर हमें नाम से जाने, ना की इस यूनानी महिला की तरह अनजान होना चाहिए। हम सभी ने प्रभु परमेश्वर को स्वीकार कर लिया है, हम उनके नाम से

बपतिस्मा ले चुके हैं, हम उनके कानून का पालन करते हैं, हम नियमित रूप से पवित्र भोजन में हिस्सा लेते हैं। इस प्रकार, हम सब अकेले यीशु के लहू से बचे हुए हैं। उनके हाथों में 'जीवन की पुस्तक' है, उनके किताबों में हमारे नाम लिखने के लिए केवल उनपर ही छोड़ दिया गया है। परन्तु, प्रभु ने हम में से कुछ को अपनी मां के गर्भ में ही चुना है, कई अन्य लोगों को हमारे जन्म से पहले भी जाना है, बहुत से लोगों को उनके जन्म से पहले भी बुलाया जाता था। तो, वह हमारा नाम जानता है, इस प्रकार हमें प्रभु के लिए प्रार्थना योद्धा बनना चाहिए, न सिर्फ हमारे शारीरिक उपचार के लिए भविष्यवक्ताओं का अनुसरण करे। लोग हमेशा पास्टर के पास प्रार्थना का अनुरोध देते हैं, जबकि उनके अपने दिल प्रभु से बहुत दूर हैं और वे व्यस्त है इस दुनिया में अपने जीवन का आनंद लेने में। हमारा जीवन ऐसा नहीं होना चाहिए, बल्कि हमें अपनी जिंदगी को आध्यात्मिक रूप से मजबूत करना चाहिए। यशायाह 35 : 3 ''ढीले हाथों को दृढ़ करो और थरथराते हुए घुटनों को स्थिर करो।'' आप और मैं दूसरों के लिए प्रार्थना योद्धा बनना चाहिए, जब भी आवश्यक हो, हमें सलाह देने में सक्षम होना चाहिए, जब वे दर्द और दुःख में हैं, तो उन्हें सांत्वना देने में सक्षम होना चाहिए। हमें अज्ञात यूनानी महिला की तरह नहीं बनना चाहिए, जो अपनी बेटी की चिकित्सा के लिए प्रभु की तलाश में आई। इसके बजाए, हमें दूसरों के लिए प्रार्थना करने और दूसरों के लिए अपने जीवन में प्रभु की महान कर्मों को साझा करने और कमजोर और जरूरतमंद को ज्यादा मजबूत करने में सक्षम होना चाहिए। हम दूसरों के लिए एक आशीर्वाद बनना चाहिए।

बाइबिल में, हम देखते हैं, कि कई अमीर लोगों के नामों का उल्लेख किया गया है। लेकिन कुछ ऐसे हैं जिनके नाम का उल्लेख नहीं किया गया है। लूका 16 : 19 '' एक धनवान मनुष्य था जो बैंजनी कपड़े और मलमल पहिनता और प्रति दिन सुख–विलास और धूम–धाम के साथ रहता था।'' हम देखते हैं कि इस अमीर आदमी के पांच भाई थे। बाइबिल में न तो उनके नाम दर्ज हैं और न ही इस अमीर आदमी का नाम भी जाना जाता है। लेकिन, यह अमीर आदमी को आग की झील में गिरने के बाद वहां से ''पिता इब्राहीम'' करके चिल्लाता है। इस के माध्यम से हमें समझना चाहिए कि वह प्रभु और मानव जाति के लिए उनका प्यार जानता था। इस दुनिया में, अमीर आदमी एक अमीर जीवन जी रहा था और कभी भी कुछ भी कमी नहीं थी। इसी प्रकार, आज भी, ऐसे कई लोग हैं जो एक समृद्ध जीवन जीते हैं, जो दूसरों के बारे में कभी भी परवाह नहीं करते, जो दूसरों के साथ अपने विश्वास को कभी भी साझा नहीं करते हैं। ऐसे लोगों का नाम 'जीवन की पुस्तक' में दर्ज नहीं किया जाएगा, बल्कि ऐसे स्वार्थी लोगों का नाम 'जीवन की पुस्तक' से हटा दिया जाएगा। यह अमीर आदमी गरीब लाजर के लिए भी कभी परेशान नहीं हुआ, जो उसके दरवाजे पर मर रहा था। बल्कि वह अपने परिवार के साथ अपना जीवन व्यतीत करने में व्यस्त था और किसी और के बारे में परवाह तक नहीं की। लेकिन याद रखें, उसका नाम पवित्र ग्रंथों में नहीं दर्ज किया गया था और 'जीवन की पुस्तक' में भी नहीं। लेकिन उसकी मृत्यु के बाद, जब उसे नरक में जलाने के लिए आग की झील में डाला गया, तब वह

''पिता इब्राहीम'' चिल्लाना शुरू किया। इसी तरह आज भी, हम में से बहुत से इस समृद्ध व्यक्ति की तरह जीवन जी रहे हैं। आश्वस्त रहें, जिनके नाम 'जीवन की पुस्तक' में से हटा दिए जाएंगे, हम पढ़ते हैं प्रकाशितवाक्य 20 : 15 ''और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया।'' बल्कि हम नरक की आग में फेंक दिए जाएंगे। अमीर आदमी का नाम बाइबल में दर्ज नहीं किया गया और उसका नाम 'जीवन की पुस्तक' से भी बाहर निकाल दिया गया।

हमारा प्रभु एक बार फिर हमें अच्छे कर्म करने का मौका देता है कि हमारे नाम जीवन की पुस्तक में दर्ज किए जाएंगे। याद है लूत की पत्नी, वह एक धर्मी इंसान की पत्नी थी। पूरे सदोम और अमोरा में केवल एक ही धर्मी व्यक्ति और उसके परिवार को प्रभु के स्वर्गदूत द्वारा बचाया गया था, इससे पहले कि इस देश को नष्ट किया जाता। प्रभु की इच्छा नहीं है कि जीवन में एक भी धर्मी व्यक्ति को नष्ट किया जाए। इस प्रकार, उसने सदोम और अमोरा के विनाश से पहले लूत और उसके परिवार को बचाने के लिए अपने स्वर्गदूतों को भेजा था। लेकिन लूत की पत्नी को क्या हुआ, उसने धन और सांसारिक धन की चाह की और प्रभु के चेतावनी देने के बावजूद की उन्हें 'पीछे मुड़कर नहीं देखना', वह दुनिया के खजाने के विनाश को देखते हुए मूड गई और इस तरह वह 'नमक का खम्बा' बन गई। याद करें, पवित्र शास्त्र में यह कहा जाता है 'लूत की पत्नी को याद रखें'। यहां तक कि प्रभु भी उसका नाम याद नहीं करना चाहता। उसका नाम जीवन की पुस्तक से हटा दिया गया है। यहां तक कि हमें अपने जीवन से सावधान रहना चाहिए, हमारे जीवन को धनवान मनुष्य और लूत की पत्नी की तरह नहीं होना चाहिए, जिनके नाम जीवन की किताब से हटा दिए गए थे। प्रभु हमेशा हमें याद रखना चाहिए। जैसा कि हम पढ़ते हैं यशायाह 35 : 3 ''ढीले हाथों को दृढ़ करो और थरथराते हुए घुटनों को स्थिर करो।'' हमारे प्रभु जरूरतमंद को बचाने और सांत्वना देने के लिए आया था, वह इस पृथ्वी पर अपने पिता के काम को पूरा करने के लिए आया था। हमें भी यीशु की तरह होना चाहिए, इस दुनिया में अच्छे कर्म करना चाहिए। आप और मैं इस धरती पर परमेश्वर के नाम की महिमा करने के लिए चुने गए है, हमें इस दुनिया में उसकी सेवा करने के लिए बुलाया गया है। बल्कि, हमें इस दुनिया में आनंद मनाने और हमारे जीवन को नष्ट करने के लिए नहीं बुलाया गया है। नीतिवचन 10 : 7 ''धर्मी को स्मरण करके लोग आशीर्वाद देते हैं, परन्तु दुष्टों का नाम मिट जाता है।'' उसी प्रभु ने लाजर, एक भिखारी का नाम, जीवन की पुस्तक में लिखा, अमीर आदमी का नाम न तो बाइबल में और न ही जीवन की पुस्तक में दर्ज किया। हमें हमेशा परमेश्वर के आगे एक धार्मिक जीवन जीना चाहिए, न की अधार्मिक जीवन। क्योंकि धार्मिक जीवन की याद भाग्यवान है, परन्तु दुष्ट का नाम नाश हो जाएगा। हम प्रभु द्वारा बनाये गए हैं, हमें अपने जीवन में उसकी इच्छाओं को पूरा करने के लिए जीना चाहिए, लेकिन हमारी बुरी इच्छाओं को नहीं। हमें अपना जीवन प्रभु के हाथों में देना चाहिए, जैसे लाजर ने किया और इस प्रकार उसका नाम जीवन की पुस्तक में दर्ज किया गया। व्यवस्थाविवरण 29 : 20 ''यहोवा उसका पाप क्षमा नहीं करेगा, वरन यहोवा के कोप

और जलन का धुंआ उसको छा लेगा, और जितने शाप इस पुस्तक में लिखें हैं वे सब उस पर आ पड़ेंगे, और यहोवा उसका नाम धरती पर से मिटा देगा।'' जीवन की पुस्तक से नाम को नष्ट करने का अधिकार किसके पास है, यह हमारे प्रभु परमेश्वर के पास अधिकार है। वह वे है जिसने हमें जीवन दिया है, वह अकेले ही स्वर्ग के नीचे से हमारे नामों को नष्ट करने का अधिकार रखता है। प्रभु की इर्षा अधर्मी पर होगी। हमारे प्रभु ने हमेशा हमें अपना प्रेम और करुणा दिखाया है। लेकिन जब हम धनवान मनुष्य की तरह हमारे जीवन जीते हैं, दूसरों के बारे में परवाह नहीं करते, केवल अपने परिवार और स्वयं के बारे में चिंता करते हैं, उस समय प्रभु का क्रोध और इर्षा हम पर गिर जाएगा और हमारे नाम इस पृथ्वी से नष्ट हो जाएगा।

धनवान मनुष्य पर प्रभु इतना क्रोधित क्यों था? उसका काम क्या था जो प्रभु को नाराज किया था? हम जानते हैं कि जब मनुष्य जन्म लेते हैं, तो वे पाप में पैदा होते हैं। दाऊद कहता है भजन संहिता 51 : 5 ''देख, मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ, और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा।'' हर मनुष्य पाप में गर्भ धारण करता है और इस तरह पाप में पैदा होता है। इस धनी इंसान ने परमेश्वर के क्रोध को लाने के लिए क्या किया? एक आदमी पाप के जन्म के बाद क्या होता है ताकि उसका नाम जीवन की पुस्तक से मिटा दिया जाए? 1 यूहन्ना 5 : 17 ''सब प्रकार का अधर्म तो पाप है, परन्तु ऐसा पाप भी है, जिस का फल मृत्यु नहीं।'' सबसे पहले, यह अधर्म है जो हमारे जन्म के बाद हमारे जीवन में बढ़ जाती है, जो हमें गहरे पाप में ले जाती है। दूसरी, यह हमारी लालसा है जो गहरा पाप उत्पन्न करता है, आइए हम पढ़ते हैं याकूब 1 : 15 ''फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है।'' लूत की पत्नी की तरह, सांसारिक चीजों की उसकी इच्छा, उसे नमक का खम्भा बना दिया। तीसरा यह हमारा संदेह है जो हमें गहरा पाप में ले जाता है, हम पढ़ते हैं रोमियो 14 : 23 ''परन्तु जो सन्देह कर के खाता है, वह दण्ड के योग्य ठहर चुका, क्योंकि वह निश्चय धारणा से नहीं खाता, और जो कुछ विश्वास से नहीं, वह पाप है।'' अविश्वास भी हमें गहरे पापों में ले जाता है। इस प्रकार ये सभी कारण हैं, जिनके कारण हमारा नाम जीवन की पुस्तक से निकला है। मनुष्य पाप में पैदा होता है, और पाप हमारे जीवन में अधर्म, जीवन की अभिलाषा, संदेह के माध्यम से बढ़ता रहता है। इन सभी चीजें एक साथ मिलकर गहरे पाप में ले जाती है। इतना ही नहीं, एक और पाप है, अर्थात मुख्य पाप हमें गहन पाप में ले जाता है। याकूब 4 : 17 ''इसलिए जो कोई भलाई करना जानता है और नहीं करता, उसके लिए यह पाप है।'' जो लोग मदद कर सकते हैं और फिर भी मदद नहीं करते, वह सबसे बड़ा पाप करता है। अमीर आदमी ने ऐसा ही किया, उसने गरीब भिकारी लाजर की परवाह नहीं की, हालांकि वह मदद कर सकता था, लेकिन उसने मदद करना जरूरी नहीं समझा। हम में से बहुत से इस अमीर आदमी की तरह हैं, हम कर सकते हैं फिर भी हम इस धरती पर प्रभु की सेवा को आगे बढ़ाने में मदद नहीं करते। जीवन की पुस्तक में से हमारे नाम को हटाए जाने का यह सबसे बड़ा कारण होगा। जब हम दूसरों की सहायता

करने में सक्षम हैं, तो हमें करना चाहिए, या फिर यह हमारी गर्दन के चारों ओर मुख्य फंदा बन जाएगा, हमें नरक की आग में ले जाने के लिए और हमारे नाम जीवन की पुस्तक से हटाने के लिए। हमारे जीवन में, प्रभु ने हमें हमारे लिए उनके दुखों से प्यार दिखाया है, उसने हमें हमारे जीवन में बहुत सी बातें सिखाई और हमें रास्ता दिखाया। उसने हमेशा दुखी और दर्द में उन लोगों को दिलासा दिलाया, वह चाहता है कि हम उन लोगों को भी जो मुसीबत में है उनकी सहायता करें। अलग–अलग तरीकों से, प्रभु ने हमें दिखाया है कि कैसे उसकी सेवा करें और उसे खुश करें। लेकिन, हमने पापों को हमारे जीवन में बढ़ा दिया है और हमें गहरा पाप में ले गया है और इस प्रकार हमारे 1) अधर्म के कारण 2) जीवन की लालसा 3) संदेह 4) हम मदद नहीं करते, जब की हम मदद कर सकते हैं। ये सभी 4 चीजें एक साथ गहरे पाप में ले लेती हैं।

प्रभु के बच्चों को कभी एक कठिन दिल का नहीं होना चाहिए जिन लोगों ने प्रभु के प्रेम का अनुभव किया है, जो कि उनके लहू से शुद्ध हुए है, जो उनकी अनुग्रह से उद्धारित हुए हैं, उन्हें कभी भी कठिन दिल के नहीं होना चाहिए। एक इंसान के रूप में, मैं भी बहुत थक जाती हूँ क्योंकि मैं प्रभु के लिए दौड़ती हूं और उसकी सेवा करती हूं, जैसे की निरंतर यात्रा के साथ, वचन और नियमित सभाओं का प्रचार करना, मैं भी थका हुआ महसूस करती हूं, लेकिन प्रभु ने हमें क्या बताया था यशायाह 35 : 3 ''ढीले हाथों को दृढ़ करो और थरथराते हुए घुटनों को स्थिर करो।'' हां, हमें इस पृथ्वी पर हमारे पिता की इच्छा पूरा करना चाहिए। मैं भी केवल एक शनिवार और रविवार की प्रार्थना सभा आयोजित करके आराम कर सकती हूँ। मुझे इतना दौड़ने की क्या जरूरत है, लोगों के मुंह से अच्छे शब्द पाने के लिए और मेरी पीठ पर शाबाशी पाने के लिए नहीं। लेकिन, मुझे यह सुनिश्चित करना है कि मेरा नाम जीवन की पुस्तक में लिखा जाए। मेरा काम प्रभु के वचन को फैलाना है, इसलिए यह भी जिम्मेदारी है कि आप सभी को यही करना चाहिए। अगर हम ऐसा नहीं करते हैं, तो हम गहरे पापों में बढ़ते हैं और अंत में हम अमीर आदमी की तरह आग की झील में डाले जाएंगे। इस प्रकार, हमें अपने दिल को कठोर नहीं करना चाहिए।

नीतिवचन 21 : 13 ''जो कंगाल की दोहाई पर कान न दे, वह आप पुकारेगा और उसकी सुनी न जाएगी।'' यह याद रखना महत्वपूर्ण है, इस प्रकार हमारे दिल को हमें कठोर नहीं करना चाहिए। हम जानते हैं कि गलील में, जब यीशु मसीह ने कई दिनों तक प्रचार किया था, अंत में वह लोगों को खिलाने के लिए इच्छुक था क्योंकि वे कमजोर और भूखे होंगे। उस समय, उसके चेलों ने यीशु को बताया कि ''लगभग 5000 लोग हैं, किसके पास इतना भोजन होगा, हम उन्हें कैसे खिला सकते हैं?'' लेकिन एक लड़का था जिसके पास पांच रोटियां और दो मछली थीं और उसने खुशी से शिष्य को अपना भोजन दे दिया। याद करें, उसकी मां ने अपने बच्चे के लिए दोपहर के भोजन के लिए कितनी सोच–समझकर बाँध के दिया होगा, क्योंकि वह बहुत छोटा था और फिर भी वह जाना और यीशु का उपदेश सुनना चाहता था। लेकिन, जब चेलों ने उसे उसके भोजन के लिए पूछा तो बिना किसी

हिचकिचाहट, उसने आनन्दित सभी को उनका भोजन दे दिया। यीशु ने भोजन को आशीर्वाद दिया और 5000 की भीड़ को खिलाया। कल्पना करें, यह बालक ने असंतोष प्रकट नहीं किया, लेकिन जब शिष्यों ने उससे पूछा तो वह स्वेच्छा से दे दिया। हमारा प्रभु यीशु हमारे दिल को देख रहा है, वह चाहता है कि हमारा दिल उस युवा लड़के की तरह हो। अर्थात देने वाला ह्रदय। प्रभु यीशु कभी भी हम से कुछ भी नहीं लेगा और हमें किसी भी चीज की कमी नहीं होने देगा, बल्कि वह हमें हमेशा आशीष देना चाहता है। उस आशीष की कल्पना करो कि छोटे लड़के को दो मछली और पांच रोटियां बांटने के लिए मिला होगा। हमारे पास भी इस छोटे लड़के की तरह दिल होना चाहिए, हम वास्तव में धन्य हो जाएंगे। यूहन्ना 6 : 9 ''यहां एक लड़का है जिस के पास जव की पांच रोटी और दो मछिलयां हैं परन्तु इतने लोगों के लिए वे क्या हैं?'' दूसरी ओर , हम इस लड़के को देखते हैं जो एक छोटा लड़का था, इस उम्र में भी वह यीशु को सुनने आया, कल्पना करें कि वह यीशु को कितना प्यार करता था, और वह वचन सुनने बहुत दूर से आया था। हां, जैसा कि यीशु ने इस छोटे से बालक को आशीर्वाद दिया, तो वह हमें भी आशीष देगा अगर हमारा दिल छोटे लड़के के जैसा हो 'चक के देखो कि प्रभु अच्छा है'।

अब हम एक भविष्यद्वक्ताओं के परिवार के बारे में देखेंगे, 2 राजा 4 : 1 ''भविष्यद्वक्ताओं के चेलों की पत्नियों में से एक स्त्री ने एलीशा की दोहाई देकर कहा, तेरा दास मेरा पति मर गया, और तू जानता है कि वह यहोवा का भय माननेवाला था, और जिसका वह कर्जदार था वह आया है कि मेरे दोनों पुत्रों को अपने दास बनाने के लिए ले जाए।'' हम देखते हैं कि बाइबल इस नबी के नाम या उनके परिवार के सदस्यों के नामों को दर्ज नहीं करता है। परन्तु, वचन कहता है ''नबी एक सेवक थे जो यहोवा का भय मानते थे''। हम देखते हैं कि नबी एलीशा ने उसकी पत्नी से कहा, सभी खाली बर्तनो को इकट्ठा करें और वह तेल के साथ भरता है, जब तक कि सभी खाली बर्तन तेल से भर नहीं गए। एलीशा तब उस महिला को तेल बेचने और उसके सारे कर्ज का भुगतान करने के लिए कहता है और बाकी बचे हुए को जीवन निर्वाह करने के लिए कहता है। ऐसे आशीष का कारण क्या है, कि अनजान भविष्यद्वक्ता एक ऐसे व्यक्ति थे जो परमेश्वर से डरते थे। इस प्रकार, हमारे जीवन में प्रभु का भय मानना आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए हमारे लिए महत्वपूर्ण है। भजन संहिता 115 : 13–14 ''13 क्या छोटे क्या बड़े जितने यहोवा के डरवैये हैं, वह उन्हें आशीष देगा। 14 यहोवा तुम को और तुम्हारे लड़कों को भी अधिक बढ़ाता जाए!'' जो लोग प्रभु से डरते हैं, चाहे हम बड़े या छोटे हैं, धन्य हो जाएंगे। नबी की पत्नी एलीशा को बताती है कि उसके पति प्रभु से डरते थे, इस प्रकार उसने अपने परिवार में प्रभु का आशीर्वाद प्राप्त किया। बाइबिल इस नबी के परिवार में किसी के नामों को दर्ज नहीं किया है, परन्तु फिर भी प्रभु के अनन्त आशीष उनके जीवन में प्राप्त हुआ है। याद रखिए, जो कोई यहोवा परमेश्वर का भय मानता है, धन्य हो जाएगा, हम पढ़ते है भजन संहिता 128 : 1–6 ''1 क्या ही धन्य है हर एक जो यहोवा का भय मानता है, और उसके मार्गों पर चलता है! 2 तू अपनी कमाई को निश्चय खाने पाएगा; तू धन्य होगा, और तेरा भला ही

होगा। 3 तेरे घर के भीतर तेरी स्त्री फलवन्त दाखलता सी होगी; तेरी मेज के चारों ओर तेरे बालक जलपाई के पौधे से होंगे। 4 सुन, जो पुरूष यहोवा का भय मानता हो, वह ऐसी ही आशीष पाएगा। 5 यहोवा तुझे सिय्योन से आशीष देवे, और तू जीवन भर यरूशलेम का कुशल देखता रहे! 6 वरन तू अपने नाती– पोतों को भी देखने पाए! इस्राएल को शान्ति मिले!'' यहां हम देखते हैं, इतने सालों के बाद भी, परमेश्वर ने नबी एलीशा के माध्यम से भविष्यवक्ताओं के परिवार को आशीर्वाद दिया। 2 राजा 4 : 5–7 ''5 तब वह उसके पास से चली गई, और अपने बेटों समेत अपने घर जा कर द्वार बन्द किया; तब वे तो उसके पास बरतन लाते गए और वह उण्डेलती गई। 6 जब बरतन भर गए, तब उसने अपने बेटे से कहा, मेरे पास एक और भी ले आ, उसने उस से कहा, और बरतन तो नहीं रहा। तब तेल थम गया। 7 तब उसने जा कर परमेश्वर के भक्त को यह बता दिया। और उसने कहा, जा तेल बेच कर ऋण भर दे; और जो रह जाए, उस से तू अपने पुत्रों सहित अपना निर्वाह करना।'' यहां तक कि हमारे जीवन में भी, हम नहीं जानते कि हमें कब प्रभु की कृपा की आवश्यकता होगी। हमें अपने दिल को कभी भी प्रभु के काम के लिए कठोर नहीं करना चाहिए। हम सभी पापी हैं, हम पाप में पैदा हुए हैं। लेकिन हमें अपने पापों को हमारे जीवन में बढ़ने की इजाजत नहीं देना चाहिए 1) अधर्म 2) जीवन की लालसा 3) संदेह 4) जब हम मदद कर सकते हैं तब हम सहायता नहीं करते हैं। ये सभी 4 चीजें एक साथ हमारे जीवन को गहरे पापों में ले जाती हैं। हमारे प्रभु का अनुग्रह का हाथ हम में से हर एक पर है, न तो हमारी शक्ति से और न ही हमारे समर्थ के द्वारा हम अपने जीवन में कुछ भी कर सकते हैं, केवल प्रभु की कृपा के शक्तिशाली हाथ और उसके आशीर्वाद ही से हम सब कुछ जिन्दगी में जीत सकते हैं और हमारी जीत को हासिल कर सकते हैं।

यह संदेश सभी को आशीर्वाद दे ! प्रभु की स्तुति हो !

प्रभु की सेवा में आपकी,

पास्टर सरोजा म.